Volume-4, Issue-2, Feb-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Economics

Human Resource Development in India

Smt. ANITA MESHRAM — Asstt. Professor Economics, Govt. Naveen College, Bhilai (Khursipar) C.G.

Dr. MANDEEP KOUR KHALSA — Professor (Economics) B.C.S. Govt. p.g. College Dhamtari, District Dhamtari Chhattishgarh

ABSTRACT

विश्व के किसी भी अविकसित अर्द्धविकसित, विकासशील एवं विकसित देशों के आर्थिक विकास में मानव संसाधन विकास का विशेष योगदान होता है। आदिकाल से विश्व की सभ्यताओं के निर्माण और पतन का श्रेय मानव को ही रहा है। हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार यह सत्य माना जाय कि इस जगत का सृजन ईश्वरीय सत्ता द्वारा किया गया है तो यह बात भी सही है कि हजारों वर्षों से चली आ रही है। इस सृष्टि का अस्तित्व और उसका परिवर्तित स्वरूप इस पृथ्वी के मानव (ईश्वर) के ऊपर ही निर्भर रहा है। विनाश एवं नवनिर्माण मानव जाति के कलाकृतियों के दो रूप कहे जाते हैं। मानव सृष्टि के इतिहास का नायक और रचयिता दोनों है। इसके अलावा मानव संसाधन किसी देश के आर्थिक तथा औद्यौगिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता है। यद्यपि किसी देश का आर्थिक विकास बहुत सीमा तक उस देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों और पूंजी की मात्रा पर निर्भर करता है, किन्तु मानव संसाधन वह शक्ति है जो इन भौतिक संसाधनों को गति प्रदान करती है। देश में नये अविष्कार, विशाल भवन, कारखाने का निर्माण, पर्वत का वृक्ष छेदन, सागरों पर विजय, नदियों के जल को नियंत्रित करने वाले विशाल बांध तथा पृथ्वी के गर्भ से निकाली गयी अक्षय खनिज सम्पदा वास्तव में मानव प्रयत्नों की ही देन है।

KEYWORDS :

अध्ययन का उद्देश्य एव पद्वति

अध्ययन का उद्देश्य आर्थिक विकास में मानव संसाधन विकास की भूमिका का अध्ययन करना है। अध्ययन पद्धति द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है।

मानव संसाधन विकास वह प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत मानव संसाधनों के विकास हेतु विशाल मात्रा में विनियोग किया जाता है। जिससे कि देश की जनशक्ति, प्राविधिक ज्ञान, योग्यता एवं कुशलता की दृ ट से विशे ाज्ञता प्राप्त कर सके। वस्तुतः मानव संसाधन विकास देश में ऐसे व्यक्ति उपलब्ध करना तथा उनकी संख्या में वृद्धि करना है जो कुशल शिक्षित तथा अनुभव सम्पन्न हो और जो देश के विकास के लिए अनिवार्य माने जाते हैं। संक्षेप में मानव संसाधन के विकास से आशय मानवीय पूंजी निर्माण से होता है, मानव पूंजी निर्माण इस प्रकार मानव में विनियोग और उसे सृजनात्मक तथा उत्पादक साधन के रूप में विकास से संबंधित है। इसके अलावा विस्तृत अर्थ में यदि कोई विनियोग इस उद्देश्य को लेकर किया जाए जिससे जनशक्ति की शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण तथा जीवन–स्तर में सुधार हो तब उसे मानव संसाधन विकास की दृ ट से सक्रिय विनियोग कहा जाता है। सरल शब्दों में मानव संसाधन विकास का अर्थ शिक्षा प्रशिक्षण का विस्तार है।

आर्थिक विकास के लिए मानव संसाधन के लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है। भारत में विभिन्न पंचव ीय योजनाओं में मानव संसाधन विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है साथ ही आवश्यकतानुसार व्यय भी किया गया। फलस्वरूप भारत में कौशल निर्माण का स्तर ऊंचा करना है। विश्व बैंक के रिपोर्ट के अनुसार विकसित देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक शिक्षा एवं कल्याण पर कुल राज्य उत्पादन का 56 प्रतिशत व्यय किया गया। 1972 तथा मध्यम देशों का 31 प्रतिशत निम्न आय वाले देशों का 70 प्रतिशत तथा विकासशील देशों का 29 प्रतिशत व्यय किया गया। तालिका 01 में विश्व के कुछ प्रमुख देशों का मानव संसाधन विकास पर किए गए व्यय को प्रतिशत में दर्शाया गया है –:

कमांक	देश	कुल रा ट्रीय उत्पाद का प्रतिशत जी0डी0पी0 प्रतिशत 2011	2014
1	अमेरिका	21.7	22.4
2	फ्रांस	4.0	3.7
3	इंग्लैंड	3.5	3.7
4	ब्राजील	3.6	2.9
5	जापान	8.4	6.1
6	चीन	10.5	13.3
7	भारत	2.4	2.6

भारत में विभिन्न पंचव ीय योजनाओं में मानव संसाधन विकास पर किये गए व्यय की स्थिति तालिका 02 में दर्शायी गयी है–

● शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शास. नवीन महाविद्यालय भिलाई, खुस. ीपार, (छ.ग.)

● प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, बी. सी. एस. ास. पी.जी. महाविद्यालय धमतरी, (छ.ग.)

तालिका :– 02 भारत में योजनाओं में मानव संसाधन विकास व्यय

पंचव ीय योजना	कुल योजना व्यय करोड़ रू0	शिक्षा, विज्ञान तकनीकी पर व्यय	कुल व्यय प्रतिशत
प्रथम	1960	149	7.6
द्वितीय	4672	273	5.8
तृतीय	8577	660	7.7
तीन वा िक योजनाऐं	6625	354	5.3
चतुर्थ	15779	905	5.7
पंचम	39426	1710	4.4
भा ठम	109292	3997	3.6
सप्तम	180000	8846	4.9
अ ठम	43410	19600	4.7
नवम्	941041	21019	4.4
दशम	1525639	30424	5.01

भारत में व ा 1951 से प्रारंभ की गयी पंचव ीय योजनाओं में शिक्षा में विस्तार पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। इस कारण देश में शिक्षा संस्थाओं एक उनमें अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। देश में 1970–71 से 1995–96 की अवधि में शिक्षा के सभी स्तरों पर काफी प्रगति हुई। किन्तु देखने से स्प ट होता है कि अन्य क्षेत्रों व स्तरों की तुलना में सामान्य शिक्षा व उच्च स्तरीय शिक्षा ने व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र की तुलना में कहीं अधिक प्रगति की है।

स्वास्थ्य सेवाएं

मानव संसाधन विकास में स्वास्थ्य सेवाओं की उल्लेखनीय भूमिका है। इससे मृत्युदर में कमी तथा जीवन प्रत्याशा बढ़ती है। पंचव ीय योजनाओं में देश में स्वास्थ्य सेवाओं को भी उच्च प्राथमिकता प्रदान की गई है जिससे मृत्युदर में कमी तथा जीवन प्रत्याशा जो 1950–51 में 32 व ा थी वह 1996 में बढ़कर 63 व ा तथा 2003 तक 66 व ा हो गई है।

जहां तक मृत्यु दर का प्रश्न है भारत में 1951–61 में मृत्युदर प्रतिहजार 146 थी जो 1993 तक 80 अनुमानित है।

विगत 50 व ाों में शिशु मृत्युदर घटकर लगभग आधी रह गयी है। यदि विश्व के विकसित देशों से भारत की शिशु मृत्युदर की तुलना की जाए तब भी भारत की शिशु दर बहुत अधिक है और विकसित देशों में 1981–2013 की अवधि में शिशु मृत्युदर एवं भारत के आंकड़े तालिका 03 में दर्शाये गए हैं–

तालिका – 03 विकसित देशों में शिशु मृत्युदर एवं भारत

क0	देश	1981	2010	2013
1	प0 जर्मनी	13	3.56	3.48
2	इंग्लैंड	12	4.69	4.50
3	अमेरिका	12	6.14	5.90
4	कनाडा	10	4.99	4.78

5	फ्रांस	10	3.31	3.28
6	रूस	28	10.31	9.70
7	आ ट्रेलिया	10	4.67	4.49
8	जापान	07	2.30	2.17
9	भारत	121	49.13	44.60

मानव विकास निर्देशांक

विश्व के सभी देशों के लिए मानव संसाधन विकास सूचक रूप में मानव विकास निर्देशांक निकाले जाते हैं। ये निर्देशांक तीन तत्वों जीवन प्रत्याशा और आय के आधार पर कुछ देशों के लिए 0–1 पैमाने पर निकाला जाता है। व र्ा 1994 के लिए संयुक्त रा ट्र विकास कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व के कुछ देशों के मानव विकास निर्देशांक निकाले गए हैं। जिन्हें तालिका 04 में दर्शाया गया है –

तालिका – 04 विकसित देशों में शिशु मृत्युदर एवं भारत

क्र0	देश	निर्देशांक	विश्व में क्रम
1	कनाडा	0.960	01
2	अमेरिका	0.940	04
3	जापान	0.940	07
4	फ्रांस	0.946	02
5	आ ट्रेलिया	0.931	14
6	यू0 के0	0.931	15
7	जर्मनी	0.924	19
8	चीन	0.626	108
9	पाकिस्तान	0.445	139
10	बांग्लादेश	0.365	144
11	भारत	0.440	140

मानव विकास के परिदृश्य को स्प ट करने के लिए दो महत्वपूर्ण सूचकांक तैयार किये गये हैं लैंगिक विकास सूचकांक एवं मानव गरीबी सूचकांक।

1. लिंग संबंधी विकास सूचकांक ;ळमदकमत त्मसंजमक क्मअमसवचउमदज प्दकमग दृ ळक्प्द्ध

सन् 1990 से संयुक्त रा ट्र विकास कार्यक्रम ने अपनी वार्ा िक मानव विकास रिपोर्ट में मानव विकास सूचक के रूप में मानव विकास माप को प्रस्तुत किया है। इस प्रकार मानव विकास सूचकांक मानव विकास की उपलब्धियों की माप है। इन उपलब्धियों में पुरू ा एवं महिलाऐं दोनों सम्मिलित हैं अर्थात इसमें लिंग संबंधी भेदभाव नहीं होता है। इस कमी को दूर करने के लिए संयुक्त रा ट्र विकास कार्यक्रम ने लिंग संबंधी विकास सूचकांक का निर्माण किया है। जिसमें तीन पहलुओं पर विचार किया गया है –

1. स्त्रियों के जन्मदर पर जीवन प्रतयाशा
2. स्त्री बालिग, साक्षरता एवं कुल नामांकन अनुपात
3. स्त्री प्रति व्यक्ति आय

2. मानव गरीबी सूचकांक ;भ्नउंद च्वअमतजल प्दकमग दृ भ्च्द्ध

सन् 1977 की मानव विकास रिपोर्ट ;भ्क्त्द्ध में मानव निर्धनता सूचकांक पर प्रकाश डाला है। सूचकांक ;भ्क्त्द्ध में यह बताया गया कि मानवीय जीवन के क्षेत्र में तीन महत्वपूर्ण स्थितियां होती हैं जो मानवीय विकास के सूचक का पूर्ण रूप से परिलक्षित करती है।

1. दीर्घ आयु
2. ज्ञान
3. अच्छा जीवन स्तर

निर्का –

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में भौतिक पूंजी संचय के बजाय आजकल व्यवहार में पूंजी स्टॉक की वृद्धि को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। जो पूर्णतः मानव संसाधन विकास पर निर्भर करता है। मानव संसाधन विकास देश के निवासियों को आय, कुशलता एवं क्षमता बढ़ाने की एक प्रक्रिया है। आर्थर लुइस का कहना है कि आर्थिक विकास मानवीय प्रयत्नों का परिणाम है। यह बात सही है कि किसी भी देश की आर्थिक विकास उसकी कार्यकुशलता तथा प्रशिक्षित श्रमशक्ति पर निर्भर करता है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. त्मेमंतबी त्मअवसनजपवद रनसल.2013
2. त्मेमंतबी त्मअवसनजपवद `मच.2013
3. प्दकपंद म्बवदवउल . क्तण् ज्ञण्ग्ण् ळनचजं
4.योजना 2013
5.कुरूक्षेत्र 2013
6.अर्थशास्त्र डॉ0 मिश्रा एवं डॉ0 भारद्वाज
7.भारतीय अर्थव्यवस्था डॉ0 जे0 पी0 मिश्रा
8.भारतीय आर्थिकनीति डॉ0 माहेश्वरी एवं डॉ0 गुप्ता।